International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 400-401

प्राचीन भारतीय कला के अन्तर्गत मथुरा कला की नारी मूर्तियों की वेशभूषा और अलंकरण

गुंजन बैस
प्राचीन इतिहास संस्कृति, एवं पुरातत्व विभाग, डॉ0 राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय मूर्तिकला में प्राचीन काल से ही साज सज्जा का व्यापक अंकन मिलता है। इस परम्परा को हम आदिम काल से ही निरंतर देख सकते हैं। विविध प्रकार की साज सज्जा को देखने पर सहज रूप से यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि चित्रकारों एवं मूर्तिकारों की दृष्टि में सौन्दर्य का कितना महत्व रहा है। यदि किसी नारी का व्यक्तित्व आकर्षक नहीं है तो उसका सौन्दर्य अपूर्ण हैं। अतः सौन्दर्य को पूर्ण बनाने के लिए नारियों ने विभिन्न साज सज्जाओं एवं वस्त्राभूषणों द्वारा देह सज्जा को निखारा है।

साज सज्जा का कार्य प्राकृतिक सौन्दर्य को श्री वृद्धि करना ही है। साज सज्जा सौन्दर्याभिव्यंजना की कला है। इसके द्वारा नारी का रूप रमणीय बनता है। 'ऋग्वेद' में लिखा है कि स्त्री के भीतर जो अरमणीयता तथा घोरता होती है, वह साज सज्जा द्वारा नष्ट हो जाती है। 'ऋग्वेद' में कई स्थानों पर नारी साज सज्जा का स्वाभाविक वर्णन हुआ है। भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' के तेइसवें अध्याय' में केश, वस्त्र, आभूषण, माला तथा अनुलेपन का विशद् वर्णन किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है कि ''साज सज्जा वही है, जो नारी के सहज गुणों को निखार देने में समर्थ हो।''

मूर्तिकारों ने मथुरा कला की नारी प्रतिमाओं में जिस तन्मयता से रस भाव आदि आन्तरिक पक्षो को उद्घाटित किया, उतनी ही तन्मयता से साज सज्जा के बाहरी पक्षों को भी पूरी निष्ठा से अंकित किया है। उनकी दृष्टि में सौन्दर्य की पूर्णता अन्तः सत्ता के साथ–साथ बहिःसत्ता के सामंजस्य में भी है। नारी प्रतिमाओं के सुन्दर केश–विन्यास, वस्त्र तथा आभूषणों के सुन्दर अलंकरणों की आकर्षक प्रस्तुतीकरण के अत्यन्त सुन्दर साज–सज्जा के कार्य में मथुरा मूर्तिकारों की दक्षता प्रशंसनीय है।

मथुरा कला शैली की नारी प्रतिमाओं में साज सज्जा का प्राबल्य है। मूर्तिकार ने सत्य के साथ सुन्दरता का भी निरूपण किया है। इस नारी प्रतिमाओं की साज–सज्जा का अध्ययन करने से हमें तत्कालीन, केशसज्जा, आभूषण तथा वस्त्र परिधान का भी ज्ञान होता है। 'वृहत्संहिता' के 58वें अध्याय में लिखा है कि प्रतिमाओं के वस्त्राभूषण देश के अनुरुप होते है। ''देशानुरूपभूषणवेशलंकार मूर्तिभिः कार्याः''।

मथुरा कला की नारी प्रतिमाएं वाह्य सज्जा की धनी है। जहां उनकी विविध केश सज्जा तथा आभूषण उनके सौन्दर्य को बढ़ा रहे है, वहीं वस्त्रों का भी कलात्मक मण्डन हुआ है। वस्त्र प्रतिमाओं के आवरण मात्र नहीं है, वह आभरण भी है।

वेशभूषा मानव व्यक्तित्व एवं सामाजिक स्तर की परिचायक होती है। सुरूचिपूर्ण ढंग से पहने गये वस्त्र धारक के व्यक्तित्व में निखार ला देते हैं वस्त्र धारण करते समय संगति एवं साम्य का सदैव ध्यान रखा जाता रहा है। समकालीन साहित्य[1] राजवर्गीय साधारण व्यक्तियों, भिक्षुओं एवं सन्यासियों के वस्त्रों का उल्लेख करते है। पेरिप्लस[2] नामक पुस्तक में वस्त्रों के कई प्रकार यथा–सूती, रेशमी एवं गर्म वस्त्र वर्णित है। इनमे काशी के रेशमी वस्त्र, सणका, पौत्री वस्त्र, यमली वस्त्र, फुटटक वस्त्र आदि प्रमूख थें। मूर्तियों पर अंकित अभिलखों से पता चलता है कि समाज में रजक (धोबी) तथा रयगिणि[3] होते थे अर्थात् कपड़े धोये तथा रंगे एवं छापे जाते थे।

अभिजात्य वर्गीय लोग अपने वस्त्रों को सुवासित भी करते थे। बौद्ध साहित्य[4] में देवी सुगन्ध से विभूषित वस्त्र तथा स्त्रियों द्वारा सुगन्धित वस्त्र पहनने के उल्लेख उनकी सुरूचि एवं सम्पन्नता को दर्शाते है। आज भी विवाहोत्सव तथा होली के अवसर पर वस्त्रों पर इत्र छिड़कने का प्रचलन है। अश्वघोष[5] के अनुसार अवसर विशेष के अनुरूप वस्त्र धारण करने की परम्परा थी। घर से बाहर जाते समय प्रायः लोग वस्त्र बदल कर जाते थें। आमोद–प्रमोद के अनुकूल वेश[6] (वेशभदनानुरूपं) शोक के समय के (रूदन वेश प्रकीर्णन) वस्त्र समयानुकूल पहनावे के संकेतक है।

मूर्तियों को देखने से ऐसा लगता है कि समाज में जलवायु के अनुरूप वस्त्र पहने जाते थे। मथुरा में पतले तथा पारदर्शी वस्त्रों का पहनावा था, वहीं गांधार में अधिक ठंड होने के कारण अधिक मोटे तथा भारी वस्त्रों का पहनावा था। मथुरा में साधारण धोती, दुपट्टा तथा पगड़ी का प्रयोग होता था। कुषाणों के समय में भारत के पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तों में यूनानी, ईरानी, रोम, पारसीक, शक तथा कुषाण जातियां बहुतायत से बस गयी थी। वे अपनी अलग वेशभूषा पहनती थी, जिनमें कई प्रकार के सिले वस्त्र थे। मध्य एशिया से आये शक और कुषाण हैट या नुकीली टोपी, कोट, पैजामा तथा ऊँचे जूते पहनते थे। ऐसे वेश को तत्कालीन साहित्य में ''उद्दीच्यवेश'' कहा गया है।

मथुरा के वेदिका स्तम्भों[7] पर उकेरी स्त्रियों के द्वारा पहनी गयी साड़ी इतनी बारीक वस्त्र की है कि बहुधा इनके नग्न होने का भ्रम होने लगता है। महाभाष्य[8] में पतले वस्त्र बनाने का उल्लेख है हर्षचरित में भी कहा गया है कि वस्त्र इतने पतले झीने तथा हल्के होते थे कि उन्हें केवल स्पर्श से ही जाना जाता था। यवनियों[9] द्वारा पहनी गयी साड़ियों के भारी चुन्नटों एवं शरीर को ढकने के बाद अवशिष्ट भाग को लटकते देखकर उनके वृहदाकार की कल्पना सहज ही हो जाती थी। सामान्यतः साड़ी कमर से पैर तक लटकती हुई पहनी गयी है पर कुछ नमूनों में यह जांघ[10] तक ही पहनी गयी है। सामने लटकते अलंकरण चुन्नट से निकलकर लटकते है। महाभाष्य[11] में एड़ी तक नीचे पहनी गयी साड़ी को ''आप्रपदीन''[12] कहा गया है।

लहंगा को सद्धर्म पुण्डरीक[13] में इसे 'साटी' कहकर पुकारा गया है। ग्वलिन नर्तकियों आदि में यह विशेष प्रचलन में रहा जो आज भी मालवा, गुजरात, मथुरा मे स्त्रियों का सामान्य परिधान है। मथुरा के वेदिका स्तम्भों[14] पर स्त्रियां पारदर्शी वस्त्र का लंहगा या कम घेर का घाघरा पहने हैं।

मथुरा के कुछ अंकनों में स्त्रियां घुटने तक की स्कर्ट पहने दर्शायी

गयी है। कंकाली से प्राप्त फलक[15] पर स्त्री मूर्ति की स्कर्ट के ऊपरी भाग पर चुन्नटदार वस्त्र लगा है। मोरा गांव[16] मथुरा से प्राप्त स्त्री मूर्ति की स्कर्ट घुटनों के ऊपर तक की है।

मथुरा की मूर्तियों में प्रायः विदेशी स्त्रियां शलवार पहने है। मथुरा में धोती के बदले इसे अधोवस्त्र के रूप में पहना जाता था।

स्त्रियों द्वारा वस्त्रों को कमर पर टिकाने हेतु कमरबन्द प्रयोग किया जाता था। कमरबन्द आकार से रस्सीनुमा ऐंठा[17] हुआ कपड़े की पतली दोहरी पट्टियों को मोड़कर बनाया गया पटके जैसा होता था मथुरा के वेदिका स्तम्भ पर स्त्री दोनों हाथो से पटके के छोर पकड़े खड़ी है। मानो वह उसे बाँधने जा रही है,

स्त्रियाँ वक्ष को ढकने के लिए कंचुक पहनती थी। मथुरा में इसका प्रचलन अधिक था। आकार में ये लम्बे एवं शरीर पर चुस्त तथा सिलवटो युक्त होते थे। इसे नारियाँ साड़ी के ऊपर[18] या अन्दर एवं शलवार[19] के साथ पहनती थीं। प्रस्तर मूर्तियों में कंचुक कई प्रकार के द्रष्टव्य हैं जैसे– कोटनुमा कंचुक, चोगानुमा कंचुक, कुर्त्तानुमा कंचुक, घेरदार कंचुक, मथुरा के एक फलक पर एवं गांधार के मधुपान दृश्य फलक पर स्त्री द्वारा पहनी गयी कंचुकी आधी बाँह की है। संघोल स्त्री, मूर्ति की कंचुकी कमर तक लम्बी है।

चतुर्भाणि[20] ने इसे 'स्तन प्रावरण'' कहा गया है। कुषाण काल में चोली स्तनपट्टो का प्रयोग स्त्रियों द्वारा कंचुक के नीचे किया जाता रहा होगा। मथुरा से प्राप्त एक अंकन में स्त्री 'स्तनपट्ट'' पहने अंकित है। मथुरा की एक नटी मूर्ति चोली के आकार का बड़े गले का वस्त्र पहने है। एक स्त्री मूर्ति की पीठ पर चोली की डोरियाँ क्रास आकार में फंसाई गयी रूपांतरित है।

स्त्रियां शरीर ढकने के लिए दुपट्टे या चादर का प्रयोग करती थी। इसे चतुर्भाणि[21] में 'प्रावार' कहा गया है। दिव्यावदान में[22] ''स्वर्ण प्रावार'' का उल्लेख रत्नसुवर्ण प्रावरकाः अर्थात सुनहले कलावतत से बिनी गई और रत्नों से जड़ित कीमती चादरें, कहकर किया गया है। मथुरा एवं गांधार दोनों ही केन्द्रों में यह सामान रूप से व्यवहार में आयी है।

मथुरा कला में पुरूषों की ही भांति स्त्रियाँ भी अपने सिर ढकती थी। मथुरा कला के एक नमूने पर स्त्री पीछे लहराती ओढ़नी सिर ढंक कर ओढें हैं। एक वेदिका स्तम्भ पर कनात से झांकती स्त्री भी अपने ओढ़नी से सिर ढंके अंकित है।

मथुरा से प्राप्त कुछ स्त्री मूर्तियां टोपी पहने रूपांकित है। इनमें सादी गोल चिपकी दोहरे मोड़वाली ज्ञात है। एक युवती की टोपी की कगार पर तारकशी द्वारा शतरंजी रेखांकन है। दुर्गामूर्ति[23] की टोपी के दांयी ओर पदक जड़ा है। जिस पर पांच कली का फूल बना है। एक मातृका मूर्ति, जो बर्लिन संग्रहालय में है, में लौटे छज्जे वाली टोपी की कगार पर चारों ओर करचोबी की कामदार फूल और पत्तियां काढ़ी है।

उपसंहार

इस प्रकार यदा कदा स्त्रियां पगड़ी बांधे उत्कीर्ण है। कंकाली से प्राप्त एक फलक पर सेविका ने गांठदार पगड़ी, जिसका एक सिरा पीछे की ओर लटक रहा है पहने है एक वेदिका स्तम्भ पर एक युवती चक्कादार पाग पहने रूपायित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दिव्यावदान, 108/21, 2, 233/9
2. शाफ, द पेरिप्लस ऑफ द यूरीथ्रियन सी पृष्ठ 72–73, 179–180
3. इपिग्राफिका इंडिका, पृ0 384, सं0 5; मानव धर्मशास्त्र 4/216
4. सौन्दरानंद, चार, 26, ललित विस्तर, पन्द्रह 218
5. सौन्दरानंद, चार, 38
6. सौन्दरानंद, चार, 38
7. लखनऊ संग्रलालय, सं0 बी0 91, 93
8. अग्निहोत्री, पी0डी0, पंतजलि कालीन भारत, पृ0 198
9. मथुरा संग्रहालय, सं0 एफ0 42
10. लखनऊ संग्रलालय, स0जे0 436, जैन स्तूप, फलक 36
11. महाभाष्य, चार, 2, 8
12. अग्निहोत्री, पी0डी0 'पंतजलि कालीन भारत' पृ0 199
13. महाभाष्य, चार, पृ0 106, 11
14. लखनऊ संग्रलालय, जे0 532 पुरो भाग ऊपर से तीसरा पट्ट जे0 24, जे0 276
15. लखनऊ संग्रलालय, सं0 जे0
16. मथुरा संग्रहालय, सं0ई0 20
17. गांधार स्कल्पचर्स इन द पाकिस्तान म्यूजियम चित्र 62, 341, 361
18. फ्रूशे, आर्ट ग्रीको बुद्धिक द गांधार, भाग–1, चि0 139–40, 244–45, भाग–2, चि0 318, 319
19. फ्रूशे, आर्ट ग्रीको बुद्धिक द गांधार, भाग–2, चि0 318, 319
20. चतुर्भाणि, सत्रह, 2, पृ0 78
21. फ्रूशे 23 (2) प्र0 3
22. दिव्यावदान, प्र0 316
23. Schatze Indisher Kunist, 1984, 18.